भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 43 अंक : 6 | 3.12.2020 गुरुवार (नवंबर - दिसंबर) | वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

अन्नकूट कृपाप्रसाद

जैसे कि सभी को विदित है कि '**कोरोना**' संक्रमण से सभी की जीवनशैली में खूब बदलाव आया है। **पू. डॉ. दिव्यांग** के परामर्शानुसार प.पू. गुरुजी के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए **पू. अक्षरस्वरूपस्वामी**, **पू. आशिष शाह** व टीम ने '**जेतलपुर**' और '**वड़ताल**' नामक काँच के दो कॅबिन बनाये हैं, ताकि मुक्त दूर से प.पू. गुरुजी का दर्शन कर सकें। दीवाली की सायं 'वड़ताल' में ही प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. मैत्रीस्वामी ने महापूजा की। अबकी बार दीवाली-नूतन वर्ष के आशीर्वाद भी प.पू. गुरुजी ने डिज़ीटल कार्ड के रूप में भेजे थे। जो महापूजा के समापन पर पू. आनंद ने पढ़े और **प.पू. गुरुजी** ने उसका निरूपण करते हुए निम्न शुभाशीष देकर सबको खूब बल प्रदान किया –

पू. आनंद – **'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥'**

प.पू. गुरुजी– यह श्लोक गीताजी का है और उसका अर्थ भी बताते हैं।

पू. आनंद – **गीताजी में भगवान श्री कृष्ण** ने कहा है-
अनन्यभाव से मेरा चिंतन करते हुए जो भक्तजन मेरी उपासना करते हैं...

प.पू. गुरुजी– मैंने पहले भी शायद एक बार ज़ोर देकर समझाया था कि **अनन्यभाव** से... 10 जगह पर जाकर, कई देवी-देवताओं के प्रति आस्था रखते हैं और फिर कहते हैं कि प्रभु हम आपके हैं। भगवान कृष्ण ने ज़ोर देकर कहा है– ***मामेकं शरणं व्रजः*** – मेरे अकेले की शरण में आना। मेरे अकेले का शरण ग्रहण कर, किसी और का नहीं। मानो काल से भी नहीं, कर्म से भी नहीं, स्वभाव से भी ना डरो, बस मेरा आसरा रखो। जो मेरी आराधना-उपासना करते हैं, ऐसे नित्ययुक्तानां – हमेशा के लिए जुड़े हुए मेरे भक्तों का योग और क्षेम मैं खुद वहन करता हूँ।

पू. आनंद – **उन नित्ययुक्त पुरुषों का योग और क्षेम मैं वहन करता हूँ।**

प.पू. गुरुजी– देखो, जब प्रभु ही हमारी डोर संभालते हैं, तो हमें निर्भय और निश्चिंत रहना है। '**चिंता**' में जो जाये, वो भगत नहीं। जो प्रभु की मूर्ति का '**चिंतन**' करे, वो भगत। प्रभु कहते हैं कि जो मेरी आराधना-पूजा करते हैं, मेरी शरण में आते हैं– मेरे साथ हमेशा ऐसे जुड़े हुए मुक्तों का योग और क्षेम मैं चलाता हूँ। जैसे अर्जुन के रथ की डोर भगवान कृष्ण ने स्वयं अपने हाथ में ली, वैसे ही ये आशीर्वाद हैं।

पू. आनंद – **इससे आगे भगवान स्वामिनारायण ने अपरंपार करूणा व प्रीति से वश, आश्रित जीवों को वरदान दिया है–**

प.पू. गुरुजी– भगवान कृष्ण ने तो ये वरदान दिया, लेकिन भगवान स्वामिनारायण ने इससे आगे एक बात करी कि जब तक पृथ्वी का तल रहेगा, मानवस्वरूप में मैं स्वयं या गुणातीतभाव को पाए हुए मेरे संतों द्वारा पृथ्वी पर मानवरूप में अखंडित रहूँगा। कितनी बड़ी बात कि भगवान स्वामिनारायण जैसे 200 साल पहले दादाखाचर को मिले थे, वैसे ही प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, साहेबजी जैसों के द्वारा हूबहू मानवस्वरूप में आज हम लोगों को भी प्राप्ति हुई है। लाडुबा-जीवुबा के साथ जो आनंद कराया, वैसे ही ऐसे संतों द्वारा आशीर्वाद और अपनी मूर्ति का सुख प्रभु आज भी देते हैं, अगर हम इस महिमा के नज़रिए से उन्हें देखेंगे।

पू. आनंद – *जब तक यह पृथ्वी का तल रहेगा, मैं स्वयं अवतरित होकर या गुणातीत परंपरा के मेरे संतों द्वारा धरा पर अखंड रहूँगा।*

वाक़ई **'प्रगट की अनन्य निष्ठा'** वाले भक्तों का यह अनुभव है कि...

प.पू. गुरुजी– ऐसे अनन्यभाव से जुड़े हुए भक्तों का यह अनुभव है कि कलियुग के इस माहौल में जहाँ दंगे-फ़साद, लूट-पाट, चोरी-डकैती चलती रहती है और ऊपर से कोरोना... कल ही मैंने बात करी थी कि इसे तो महाराज असल में घसीट कर ले जाने वाले हैं। सब भक्तों और हमने प्रार्थना भी रखी हुई है कि इसे सूर्यलोक में ले जाकर भस्मीभूत कर दो। जाते हुए वो भी छटपटा रहा है, ज़ोर लगा रहा है। इसी कारण आज देखो तो दिल्ली में कोरोना के केस खूब बढ़ते दिखाई पड़ते हैं।

पू. आनंद – कलियुग के इस माहौल में और वर्तमान स्थिति में, जब **'कोरोना'** संक्रमण प्रचंड रूप लिये हुए है , आश्रित भक्तों की रक्षा हेतु प्रभुधारक संत ढाल बन कर खड़े हैं - सहभागी बने हैं।

प.पू. गुरुजी– **...स्वामिजी ने आशीर्वाद दिया हुआ है** कि स्वामिनारायण का जो भी आश्रित होगा, कोरोना उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगा। तो भय के बिना, दिल पर तनिक भी उसकी घबराहट लाना नहीं। हमारा फर्ज़ इतना ही है कि सतत भजन किया करें और भक्तों के साथ महिमा से रसबस होकर, इनके साथ सेवा में लग जाएँ। देखो, हम अपनी हिफाज़त - रक्षा के लिए ये करेंगे, तब भी प्रभु इसे मान लेते हैं कि ओहो! तुमने मेरी भक्ति करी है। हम भजन करते हुए बोलते हैं – हे महाराज! रक्षा करो, रक्षा करो। स्वामिनारायण, स्वामिनारायण... रक्षा करना, रक्षा करना... तब भी महाराज समझ लेते हैं कि ओहो! तुमने मुझे याद किया, मेरा भजन किया - मेरी पूजा करी। **'स्वामिनारायण' महामंत्र को 'महामंत्र' इसलिए लिखा और कहा गया है, क्योंकि वह जीवंत है। स्वामिनारायण मंत्र को प्रगटाये हुए संत धरातल पर हमेशा के लिए हमारे साथ मौजूद रहेंगे। इसलिए उसकी शक्ति प्रचंड है।** सो, इसे महामंत्र कहा है और 'सर्वोपरि' इसलिए क्योंकि – मानवस्वरूप में प्रगट है। उसकी सत्ता चलती है। काकाजी कहते थे – आप लोग आज़माते क्यों नहीं हो? स्वामिनारायण मंत्र का जाप करके तो देखो, लेकिन अनन्यभाव से! स्वामिजी की भाषा में – इधर-उधर (डाफोरिया मारते) ताक-झांक करते हुए नहीं।

पू. आनंद – सो, किसी सोच-विचार में जाये बिना हमारा एकमात्र यही कर्तव्य और भक्ति है कि प्रगट संत की स्मृति सहित सतत 'स्वामिनारायण' महामंत्र का जाप करते रहें...

गुरुहरि काकाजी के स्वमुख से कई बार सुना है :

'सर्वोपरि स्वामिनारायण' – मान कर आज़माओ तो सही...

प.पू. गुरुजी– आज़माओ तो सही। तो, ठीक से सुन कर डेट भी नोट कर लेना। आज 14 तारीख हुई... आप जानते हो, हर साल हम 31 दिसंबर को मध्यरात्रि महापूजा करते हैं। इस साल हरेक रुबरू अटेंड नहीं कर पाएगा, लेकिन टी.वी. के माध्यम से दर्शन जरूर हो पाएँगे या थोड़े-थोड़े करके मुक्त आयेंगे। सब के लिए टाइम बाउंड होगा। तो, आशीष जिस प्रकार सॅट करे...

तब 'नाभि का भजन' – जैसे बच्चा एकदम भीतर से रोता है, वैसे तीव्रता से... एकदम कोई विडंबना आ जाती है, तो अंतर से जो प्रार्थना करते हैं – वो नाभि का भजन! काकाजी कहते – डूंटी से हांक मारो (पुकार करो)। दुःखी होकर, रो-रो कर अंतर से, भीतर से, तीव्रता से करो कि मेरा ये काम क्यों नहीं होता है? मेरे स्वभाव क्यों नहीं टलते हैं? चीख-पुकार कर... शरीर पर कुछ चुभ या लग जाता है, तो हम कैसे चिल्ला पड़ते हैं? या अचानक किसी की डेथ की खबर आती है, तो कैसे शॉक लग जाता है? वैसे भजन करें – स्वामिनारायण...स्वामिनारायण...

मैंने एक बार कहा था – डूबता हुआ आदमी जब बाहर निकलने की कोशिश कर रहा हो और ऊपर से अन्य कोई नीचे धकेलता हो, तब वो कैसी चीख मारता है? ऐसा भजन करना चाहिए।

पू. आनंद – **सो, 31 दिसंबर की मध्यरात्रि को महापूजा में धाम, धामी और मुक्तों का आवाहन करके गुरुहरि काकाजी के शब्दों में –'नाभि का भजन' यानि धुन-भजन करके सर्वोपरि प्रभु को, अंतर से दुःखी होकर चीख-पुकार के, प्रार्थना करें –**

हे महाराज! अब यह कोरोनारूपी महाराक्षस को सूर्यलोक में ले जाकर भस्मीभूत कर दो...

श्री ठाकुरजी के दर्शन एवं प्रगट संत के सान्निध्य से वंचित रहने के कारण इस बार दीपावली, नूतन वर्ष के आगमन पर सहज ही सभी मायूस होंगे।

प.पू. गुरुजी– कोविड के कारण फ्रीली मुवमेंट नहीं कर सकते, आ नहीं सकते। सो, घर में रहकर ही भावना से आवाहन करके, भजन करना पड़ेगा। इसलिए भीतर में थोड़ी मायूसी रहेगी ही...

...ब्रह्मस्वरूप संत हवा की तरह सर्वत्र है। वे मेरे पास ही हैं, सामने ही बैठे हैं। यूं मानकर ऐसे प्रत्यक्षभाव की भावना से घर में - केन्द्र में रहकर नए वर्ष पर आरती करें... कढ़ी-चावल और मिक्स सब्जी का भोग लगा कर प्रसाद लें। काकाजी हमेशा बोलते थे या कोई काग़ज़ भी लिखते, तो आख़िर में लिखते – शुभं भवतु मंगलं भवतु। मानो आपका शुभ हो मंगल हो। नए वर्ष पर काकाजी के वो आशीर्वाद आज भी ऐसे ही जीवंत हैं - वैसे ही हम पर बरस रहे हैं...

प्रति वर्ष सभी अन्नकूटोत्सव - नूतन वर्ष पर श्री ठाकुरजी को विभिन्न व्यंजन अर्पित करके मुक्त अपनी भावनायें व्यक्त करके, अन्न को 'ब्रह्ममय' बनाते हैं। परंतु 'कोरोना' संक्रमण की तीव्रता के कारण, मंदिर में पू. सुहृदस्वामीजी के साथ सेवकों और अक्षरज्योति में बहनों द्वारा बनाये तकरीबन 85 व्यंजनों और हरिभक्तों की ओर से ड्राई चीज़ों का थाल करके संतों, सेवकों एवं बहनों ने **14 नवंबर** को अन्नकूट की आरती संपन्न की, जिसका ऑनलाईन दर्शन करके, मुक्तों ने अपने घरों में भी श्री ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट लगाया।

मेरी मरज़ी बिना रे, किसी से तिनका न तोड़ा जाये, यूँ मुझे मानना रे, मेरे आश्रित सब नर-नारी...

– भगवान स्वामिनारायण

'कोरोना' संक्रमण को मद्देनज़र रखते हुए, दिनाँक **6 अप्रैल 2020** को न्यूज़ीलैंड में विराजमान **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** ने आशीर्वाद देते हुए गुणातीत समाज के मुक्तों को आदेश दिया –

भगवान स्वामिनारायण *द्वारा स्वयं लिखा और गाया गया पद – 'बोल्या श्रीहरि रे...'*

सभी रोज़ सुबह-शाम अवश्य गायें, जिससे हमें बल मिले और उसके मुताबिक हमारी निष्ठा दृढ़ करें...

करीब नौ मिनिट के आशीवर्चन में प.पू. स्वामीजी ने करीब चार-पाँच बार निम्न पंक्ति दोहराई –

'जीव, ईश्वर आदि रे, माया, काल, पुरुष-प्रधान, सबको वश करूँ रे, सबका प्रेरक मैं भगवान...'

और... स्वामिनारायण भगवान द्वारा कथित इस पद की प्रतीति **7 अक्तुबर 2020** को हुई, जब हार्ट एटेक के कारण करीब बीस दिन अस्पताल में डॉक्टर मुक्तों की सेवा लेकर **'भक्ति आश्रम'** में भगवान भजती बहनों की चैतन्यजननी समान **परम पूज्य सुहृद बहन** जिन्हें गुणातीत समाज में अधिकांश **'प्रेम बहन'** के नाम से जानते हैं, वे सायं करीब पौने छः बजे अक्षरधाम सिधारीं। **परम पूज्य सुमन बहन** ने खूब भारी हृदय से यह समाचार परम पूज्य दीदी को दिया। पूरे गुणातीत समाज के लिए यह एक अचरज की बात थी। सबको सदमा जैसा लगा... प.पू. प्रेम बहन को कई वर्षों से भले ही दैहिक तकलीफ काफ़ी थी, लेकिन भगवान स्वामिनारायण एवं उन्हें अखंड धारे प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की सेरेछाया में उन्हें इन पीड़ाओं का कोई भार ही ना था। 21 सितंबर को अस्पताल में उन्होंने आयु के 70 वर्ष पूर्ण किये। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में उनके स्वास्थ्य हेतु भजन निरंतर जारी तो था, लेकिन श्रीजी की मरज़ी बिना किसी से तिनका न तोड़ा जाये... और **8 अक्तुबर** को भक्ति आश्रम के विशाल प्रांगण में स्वामिनारायण मंत्र के नाद की गूँज में मुक्तों ने उन्हें अंतिम विदाई दी। **प.पू. सर्वेश्वर बहन** का नेतृत्व प्राप्त करके, **प.पू. सुमन बहन** और सभी बड़ी बहनों ने मिल कर प.पू. प्रेम बहन की अंत्येष्ठि जिस भक्तिभावना से की, उसे ऑनलाइन देख कर **संतभगवंत साहेबजी** ने निम्न आशिष वर्षा की –

प.पू. प्रेम बहन अक्षरधाम निवासी हुए। सभी के हृदय में दुःख से क्षोभ हो गया। स्वामीजी के आशिष से उनके सान्निध्य में जो साधना कर रहे हैं, उनके प्रति हम सबकी संवेदनाएँ हैं... ***अद्‌भुत साधु को अद्‌भुत विदाई दी।*** *आप लोगों ने जिस शिस्त से शास्त्रोक्त विधि करके भक्ति अदा की, उसे देख कर मस्तक झुक गया। सच में आप सभी को वंदन है। किसी ने योगीजी महाराज से कहा कि महाराज और शास्त्रीजी महाराज अपने समय में लोगों को समाधि कराते थे। तो, आप भी हमें समाधि करायें। योगीजी महाराज ने कहा कि हम 'ज्ञानसमाधि' कराते हैं। ज्ञानसमाधि क्या ? तो, शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का जो प्रवर्तन किया कि भगवान सदा साकार और दिव्य हैं। संत द्वारा मानवरूप में हमें प्रगट मिले हैं। उनके प्रति आत्मबुद्धि और प्रीति हो, उनका होकर जीना है, उन्हें राज़ी करना है। प्रत्येक प्रवृत्ति उनकी मरज़ी के मुताबिक करनी है।* ***स्वामीजी को अक्षरपुरुषोत्तम का स्वरूप मान कर, सभी संत और आप सब अग्रसर होकर जो भक्ति अदा कर रहे हो, यह बापा के अनुसार 'ज्ञानसमाधि' है।*** *ऐसे भयंकर प्रसंग पर आप में जो स्थिरता रही, भीतर में परम शांति है और स्थितप्रज्ञता रही; ऐसी ज्ञानसमाधि में रहने वाली बहनों को क्या आशीर्वाद दें ? सच में* ***दादुकाका के शब्दों में कहें तो –***

'गुणातीत ज्योत' में बा-बेन के सान्निध्य में हंसा दीदी, ज्योति बहन, तारा बहन, देवी बहन जैसी बहनों ने, गुरुजी के सान्निध्य में आनंदी दीदी और सभी बहनों ने
और
स्वामीजी के सान्निध्य में प्रेम बहन, बेला बहन, सर्वेश्वर बहन, सुमन बहन, सहज बहन और सभी बहनों ने स्वामिनारायण संप्रदाय में खूब अद्‌भुतता बख़्शी है। *इसके लिये आप सभी को सच में अभिनंदन-वंदन, जय श्री स्वामिनारायण! इसकी* ***नींव में प.पू. प्रेम बहन याहोम हो गईं...*** *स्वामीजी की कृपा है कि आप सभी खूब बल में हो।* ***प.पू. स्वामीजी का दिया ज्ञान, बातें आप जो वर्तन में लाये हो, उससे स्वामीजी खूब निश्चिंत हैं। सच में स्वामीजी को आपने अपने हृदय में रखा - प्रगटाया है।*** *सभी को ऐसी प्रतीति हुई... ऐसे प्रसंग पर आपकी स्थिरता रही, उस कारण आपकी साधुता समाज के लिए आदर्श रूप है... हम सब आपके साथ हैं... सर्वेश्वर बहन ने कहा कि स्वामीजी ने कोठारीस्वामीजी के अग्नि संस्कार के समय कहा था कि वे निर्दोषबुद्धि के स्वरूप थे। इसी प्रकार, प्रेम बहन की सहजावस्था, निर्मानीभाव, दासत्व, वात्सल्यभाव जैसे जो गुण थे, वो समग्र गुणातीत समाज में प्रसरे ऐसा सर्वेश्वर बहन ने माँगा! वो आशीर्वाद आप सभी को प्राप्त हो गये...*

आप सब में जो माहात्म्य है, उससे दासत्व अपने आप प्रगटेगा। ***दासत्व साधन से नहीं प्रगटता। जैसे-जैसे भगवान और संतों व भक्तों का माहात्म्य बढ़ता जायेगा, दासत्वभाव अपने आप बढ़ता जायेगा।*** *जैसे – दीदी, प्रेम बहन, सर्वेश्वर दीदी, सुमन बहन, सहज बहन, आनंदी दीदी में दर्शन होता है... ऐसा दासत्वभाव आप सब में प्रगट रहा है। उसका दर्शन प्रेम बहन की अंत्येष्टि के समय करके ठंडक हुई। स्वामीजी कितने राज़ी हुए होंगे। उसकी कल्पना नहीं कर सकते। स्वामीजी अंतर से राज़ी हुए होंगे और ऐसे पुरुष राज़ी हों, तो साधुता और दासत्व जैसे गुण प्रगटते हैं। ऐसे गुण सभी में प्रगटें – यही प्रभुचरणों में, गुरुचरणों में प्रेम बहन को श्रद्धांजली अर्घ्य करते हुए प्रार्थना करते हैं...*

प्रेम बहन गये नहीं हैं, सर्वेश्वर बहन द्वारा हमें मिले हैं। उनकी आज्ञा में - उनके साथ रह कर आनंद करते हुए स्वामीजी की सुवास फैलायें – *ऐसी प्रार्थना...*

पूर्वाश्रम में अपनी भाभी के माध्यम से प.पू. प्रेम बहन को प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी का परिचय हुआ और गुरुहरि काकाजी के अध्यात्म सिंचन-ज्ञानगोष्ठि से प.पू. स्वामीजी का माहात्म्य जाना। साथ ही गुरुहरि काकाजी के वचन से प.पू. ज्योति बहन से संबंध हुआ और प.पू. स्वामीजी के प्रति निष्ठा दृढ़ करते हुए, उनकी निश्रा में भगवान भजने की राह पर अग्रसर होकर, **1984 में नींव के स्वरूपों द्वारा भागवती दीक्षा प्राप्त करके, 'हरिधाम' की साधक बहनों के नेतृत्व की बागडोर संभाली। जीवन के अंतिम श्वास तक प्रभुभक्ति-गुरुभक्ति अदा करते हुए और अपने नामानुसार सबका 'सुहृद' बन कर, सभी से एक अमिट - आत्मीयता का संबंध बनाया।** तभी तो 7 तारीख की सायं उनके देह त्याग का संदेश सुनते ही **प.पू. आनंदी दीदी** का अंतर रो पड़ा और उनके साथ के निम्न संस्मरणों से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं, जो प.पू. प्रेम बहन के विरल व्यक्तित्व का सहज दर्शन कराती है–

हम स्वरूपों को कर्ता-हर्ता कहते हैं। मौके पर यही बात याद रखने जैसी है। स्वामीजी ने उनके चैतन्य के लिए जो ठीक समझा होगा, वही किया होगा। स्वामीजी की आज्ञा से हम रोज़ भजन में गाते हैं– मेरी (श्रीजी महाराज) मरज़ी के बिना रे, किसी से तिनका न तोड़ा जाये... तो, इतनी बड़ी घटना ऐसे ही नहीं बन सकती।

हरिधाम की बहनों से बात हुई, तो उन्होंने बताया कि बीस दिन से स्वामीजी बिलकुल मौन रहे हैं। किसी भी बहन की कोई प्रार्थना का जवाब उन्होंने नहीं दिया। सिर्फ एक बार डॉक्टर्स से बात हुई, तो ऐसा बोले – आपको प्रेम बहन की सेवा के लिए निमित्त बनाया है और कल रात को मॅसेज भिजवाया कि प्रेम बहन की खोट - कमी किसी को नहीं लगेगी...

पहला – *मुझे याद आ रहा था कि 1994 में 1 से 3 फरवरी हमारे दिल्ली मंदिर की* ***मूर्तिप्रतिष्ठा*** *और* ***काकाजी का अमृतपर्व*** *मना रहे थे। 30 जनवरी को बेला बहन ने मात्र 38 साल की उम्र में शरीर छोड़ दिया, यह खबर आई... तब ज्योति बहन यहीं दिल्ली में मौज़ूद थीं। दो मिनिट के लिए तो सभी सुन्न हो गये... तब गुरुजी का मॅसेज आया कि हमें रोना नहीं है, जो कुछ भी हुआ है वो स्वरूपों की मरज़ी से ही हुआ होगा... हैरानी की बात है कि बेला बहन तो भक्ति आश्रम की स्तंभ सरीखी थीं, फिर भी अपनी भक्ति अदा करने प्रेम बहन दिल्ली आ गईं...*

दूसरा – *तीन साल पहले की बात है। गुरुजी को 'अड़दिया' का पर्टीक्युलर टेस्ट चाहिए। तो, उन्होंने प्रेम बहन को अड़दिया के लिए कहलवाया। उस समय अड़दिया बनाने का सीज़न नहीं था। फिर भी काठियावाड़ से स्पेशियल अड़दिया मंगवा कर गुरुजी के लिए भेजे। उसके बाद जब भी अड़दिया का सीज़न आया तब दिल्ली की ओर कोई आ रहा होता, तो वे हमेशा गुरुजी के लिए भेजती थीं। मुझे यह बात खूब स्पर्श कर गई कि* ***जो गुरुजी की एक बार कही बात इतनी तत्परता से पकड़ती हैं, तो स्वामीजी के लिए तो उनका जीवन है, उनकी बात कितनी गहराई से पकड़ती होंगी!***

तीसरा – *एक बार किसी उत्सव निमित्त हरिधाम की बहनों के लिए नई साड़ियाँ बनी होंगी, तो उन्होंने अक्षरज्योति की सारी बहनों को ख़ास याद करके साड़ियाँ भेजीं। पिछले साल उन्होंने सर्दियों के लिए पवई और अक्षरज्योति की बहनों के लिए भगवा जॅकेट्स दीं। इसी प्रकार, कई बार हॅन्ड बेग्ज़ भी दिये। चीज़ों की कोई महत्ता नहीं, पर इन सब के द्वारा उनका एक अपनापन झलकता है।*

इसी तरह पिछले साल ही भक्ति आश्रम में एक नई बिल्डिंग बनी है। हम जनवरी 2020 में 'आत्मीय युवा महोत्सव' निमित्त उसके 'सुहृद विहार' ब्लॉक में ठहरे थे। उस दौरान सुमन दीदी से जब-जब मेरी बात हुई, तो उन्होंने बताया कि प्रेम बहन के दिमाग़ पर आप छायी हुई हो। प्रेम बहन ने ख़ुद वहाँ की सारी चीज़ें सिलेक्ट कीं। यहाँ तक कि मुझे जिस कमरे में ठहराना था, वहाँ आख़िर दिन तक सब कुछ ख़ुद चेक करके आईं कि सब आनंदी के मुताबिक़ है कि नहीं। मेरी तकलीफ को ध्यान में रखते हुए सारी सुविधा कराई। भक्ति आश्रम में लिफ्ट लगवाने के लिए उन्होंने पहले स्वामीजी को एक-दो बार कहलवाया होगा, तो उत्तर में प.पू. स्वामीजी ने कहलवाया कि सब चढ़ सकते हैं, लिफ्ट की क्या ज़रूरत है? स्वामीजी देह के प्रति हमेशा अनादर व्यक्त करते हैं। लेकिन, इस बिल्डिंग में उन्होंने यह कहलवा कर लिफ्ट लगवाई कि आनंदी को हार्ट की तकलीफ है, वह सीढ़ीयाँ नहीं चढ़ सकती। ये ***सारी चीज़ें एक 'मावतर' का एहसास कराती हैं...***

काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, गुरुजी हम से कई गुणा ज़्यादा जानते हैं। सो, जो ज़रूरी लगा होगा, वो होने दिया होगा। हम सिर्फ प्रार्थना करें कि महाराज बहनों को - पूरे समाज को ख़ूब बल दें। आज शाम को ***गुरुजी पहला वाक्य यही बोले – पूरे गुणातीत समाज को बहुत बड़ा लॉस हुआ है... प्रेम बहन ने स्वामीजी का सच में सेवन किया...*** *माईन्ड का काम तो बहुत अलग है; 'क्यों हुआ, कैसे हुआ, कब हुआ' – उसी उधेड़बुन में लगा रहता है। मन हमेशा ऐसे प्रश्न फेंकता रहता है। लेकिन,* ***निर्दोषभाव और दिव्यभाव से जो सोचेंगे - दिल की सच्चाई से मानेंगे कि जो कुछ भी होता है वो बड़े पुरुष की मरज़ी से होता है। तो, उन मुमुक्षुओं का चैतन्य प्रगति को पायेगा।***

प.पू. प्रेम बहन के उपरोक्त प्रसंग तो प.पू. दीदी के साथ के अद्‌भुत संबंध का दर्शन कराते ही हैं, पर सभी के प्रति उनकी जो सहज दासत्वभक्ति थी, उसी का उन्होंने सब में सिंचन किया। इसी साल 'आत्मीय युवा महोत्सव' हेतु 2 जनवरी को जब अक्षरज्योति की कुछ बहनें सुबह की ट्रेन से हरिधाम पहुँची, तब ख़ूब व्यस्त होने के बावजूद भी **प.पू. सर्वेश्वर दीदी** और **प.पू. सुमन दीदी** दर्शन देने के लिए नई बिल्डिंग में आईं और पूछा –

सब कुछ व्यवस्थित है ना, कुछ चाहिये तो नहीं?

साथ ही बताया कि थोड़ी देर बाद प.पू. प्रेम बहन भी आने वाली हैं। तब उन्हें नमन करते हुए सबने प्रार्थना की –

प्रेम बहन को न आने दें, हम ही उनके दर्शन के लिए आते हैं।

प्रसंग बहुत छोटा है, लेकिन ख़ूब मर्म लिये है जो **प.पू. दीदी** अकसर कहती हैं–

मैं ख़ूब भाग्यशाली हूँ कि गुणातीत समाज में सबसे छोटी हूँ।

प.पू. दीदी के प्रति प्रेम वश तो प.पू. प्रेम बहन स्वभाविक रूप से मिलने आयें, लेकिन छोटी सेविकाओं से मिलने का आग्रह रखना, वो तो **'दास का दास' होने की ही चाह दर्शाता है।**

अनंत चैतन्यों की राहबर **प.पू. प्रेम बहन** की स्थूल कमी तो सदैव महसूस होगी, लेकिन यह भी सत्य है कि ऐसी प्रभुधारक विभूति धरा पर से जाती नहीं... उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में यही प्रार्थना कि उनके जैसी दासत्वभक्ति हम में प्रगटे...

...प.पू. प्रेम बहन के अक्षरधामगमन की इस दु:खद घटना से
गुणातीत समाज अभी उभर भी नहीं पाया था कि
11 अक्तुबर 2020 को
अनुपम मिशन की नींव में **संतभगवंत साहेबजी** के निश्रा में
जिन अष्ठ भाइयों ने नैक्टाई साधु की दीक्षा लेकर सर्वप्रथम शुरुआत की,
उनमें से एक **वरिष्ठ सद्गुरु प.पू. पूनमभाई** ने **78 वर्ष** की आयु में
एक सप्ताह बीमारी ग्रहण करके अक्षरधामगमन किया।

पूर्व जन्म के अनादि मुक्तराज प.पू. पूनमभाई युवा अवस्था में विज्ञान का अभ्यास करने वल्लभ विद्यानगर आये। गुरुहरि योगीजी महाराज की कृपा और आशीर्वाद से इस क्षेत्र में प्रगति की और स्वामिनारायण धर्म स्वीकार करके, गुरुहरि योगीजी महाराज के स्वहस्त से कंठी पहनी और... संतभगवंत साहेबजी से मित्रता हुई। गुरुवर्य योगीजी महाराज के प्रेम वश, गृहस्थी होते हुए भी कर्मयोगी 'साधु' बन कर अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर हुए। फलस्वरूप गुरुहरि काकाजी के वचन से गुरुहरि पप्पाजी व प.पू. सोनाबा के साथ अजोड़ प्रीति से जुड़ गये। पत्नी पू. चंपा बहन गुणातीत ज्योत में रह कर सेवा करने लगीं और दो पुत्र पू. मुकेशभाई व पू. नरेन्द्रभाई व्रतधारी साधक बन कर धन्य हुए।

आनंदी प्रकृति, ऋजु हृदय और प्रेम के दिव्य स्वरुप प.पू. पूनमभाई ने अपने जीवन की एक अमिट छाप सभी के हृदय पर अंकित की है। 'अनुपम एडेसिव' में सेल्स का कार्य उन्हें सौंपा गया, जबकि उस फील्ड का उन्हें तनिक भी अनुभव नहीं था। लेकिन, फिर भी उस सेवा को उन्होंने बख़ूबी निभाया...

अपने सखारूप संतभगवंत साहेबजी को गुरुहरि योगीजी महाराज का स्वरूप मान कर, रंकभाव से उनका सेवन करके उन्होंने सभी के लिए एक आदर्श स्थापित किया। तभी तो 2014 में अपने प्राकट्य पर्व पर मुमुक्षुओं को साधना मार्ग की अद्‌भुत चाबी बताते हुए वे सहजता से बोले–

'हम सभी के स्वभाव - प्रकृति भले अलग थे, लेकिन केन्द्र में एक योगीबापा थे और मूलभूत साधना भी केवल उन्हें राज़ी करने की थी; इसलिए हम सभी निहाल हो गये। प्रभु आज गरज़ू बने हैं; मानव देह में संतभगवंत साहेबजी के स्वरूप में हमें मिले हैं...'

वाक़ई, **प.पू. पूनमभाई ने जैसा कहा, वही सत्य मान कर, कोई भी दिखावा किये बिना, मूक रह कर चैतन्यों की परवरिश की है। यही उनकी सतंभगवंत साहेबजी के प्रति अनुपम प्रीति है।**

ऐसे भक्तिपूर्ण हृदय के प.पू. पूनमभाई के देहत्याग पर प.पू. गुरुजी को सहज ही उनके कई प्रसंग याद आये, जिसका

उल्लेख त्रयोदशी की ऑनलाइन सभा में करते हुए, **प.पू. गुरुजी** ने सभी की ओर से भावांजलि अर्पित की–

'अनुपम एँड्डेसीव्ज़' के काम के लिए काकाजी के साथ पूनमभाई साउथ इंडिया में 'सेलम' गये थे।

वहाँ से काम पूरा करके वे ताड़देव लौटे। तब वहाँ रहते हुए ***पूनमभाई ने किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखी।***

बल्कि ***ताड़देव को अपना मान कर, हँसते मुख से बर्तन - कपड़े धोने की सेवा में वे जुड़ जाते।***

जिसे अपनी कोई अस्मिता-मान्यता या लाइकिंग नहीं हो,

वही इस प्रकार सभी के साथ सहजता से जुड़ सकता है।

इससे भी अधिक, ***काकाजी धुन कराते, तो वे अचूक वहाँ आकर बैठते और काकाजी का दर्शन करते।***

प्रभु ने ऐसे साधु की हमें भेंट दी थी। अब स्थूल रूप से उनकी हाज़िरी तो हमें नहीं प्राप्त होगी,

लेकिन ***उनकी छुपी भक्ति की सौरभ समाज में व्याप्त रहेगी ही।***

उन्होंने अपने वर्तन से जो मार्गदर्शन दिया और स्वरूप को राज़ी करने का दिशा निर्देश किया,

उसकी ओर अग्रसर रहने हम कृतनिश्चयी रहें, यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली कही जाये।

इस हेतु साहेब हमें आशीर्वाद, बल और प्रेरणा दें

और... हम ऐसा भजन करें कि उनके जैसे गुण प्राप्त हो, ताकि प्रत्यक्ष स्वरूपों को राज़ी करके,

उनकी भाँति अपना जीवन धन्य करें – यही इस अवसर पर प्रार्थना...

प.पू. पूनमभाई को अक्षरनिवासी हुए एक सप्ताह ही हुआ था कि **18 अक्तुबर 2020** को **अनुपम मिशन** के बिक्री केन्द्र में सेवा करते **पू. दामजीभाई छात्रोला** अक्षरनिवासी हुए।

गुरुवर्य योगीजी महाराज ने संतभगवंत साहेबजी को आशीर्वाद देते हुए कहा था–

'गुणातीतानंदस्वामीजी से ब्रह्मविद्या पढ़े 80 मुक्तों के तुम नेता हो, जो स्वयं तुम्हें ढूँढते हुए आयेंगे।'

प.पू. बापा के इस आशीर्वाद रूप ही पू. दामजीभाई ब्रह्मज्योति आये और संतभगवंत साहेबजी की निश्रा में दीक्षा लेकर वहीं रहने की दृढ़ता कर ली।

गुरुहरि पप्पाजी के सूत्र – ***'मैं, ठाकुर और क्रिया...'*** को ध्यान में रखते हुए बिक्री केन्द्र की सेवा निपुणता से की।

गुणातीत स्वरूपों की दृष्टि हम पर पड़े, उससे बढ़ कर जीवन की धन्यता क्या?

ऐसे आदर्श सेवक की भाँति हम भी प्रगट स्वरूप को राज़ी करने की गरज़ रखें ऐसी प्रार्थना।

पू. दामजीभाई के निधन का समाचार सुन कर अभी तो सभी अचरज में ही थे कि दो दिन बाद ही

20 अक्तुबर को खबर आई कि अनुपम मिशन के ही **62 वर्षीय** साधक भाई **पू. घनश्यामभाई वींछी** ने देहत्याग किया। सुन कर मानो पैरों तले ज़मीन घिसक गई। क्योंकि एक के बाद एक अनुपम मिशन में यह तीसरी घटना थी।

अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का अनुसरण करते, मुंबई के निष्ठावान **प.भ. पुरुषोत्तमदासभाई वींछी** के इस सुपुत्र का नामकरण गुरुवर्य योगीजी महाराज ने किया। मुंबई – कालबादेवी में रहने के कारण वे सत्संग के लिए नियमित ताड़देव जाते। जब भी गुरुवर्य योगीजी महाराज मुंबई पधारते, तो समागम के लिए कपोळवाड़ी में भी जाते। ताड़देव के कठिन संजोगों में उनके कुटुंब ने तन, मन, धन और आत्मा से खूब साथ भी दिया। **प.भ. बाबुभाई दरबार** बाल मंडल की सभा आयोजित करते थे, उसमें पू. घनश्यामभाई अचूक जाते। गणेशपुरी शिविर दौरान गुरुहरि पप्पाजी ने उनके कुटुंब की जिम्मेदारी स्वयं पर लेकर धन्य किया। माता पू. जमना बहन के जतन से उनके बालकों में निर्दोषबुद्धि और माहात्म्युक्त सेवा का सिंचन हुआ। इन्हीं संस्कारों से भरे पू. हरिकृष्णभाई ने अनुपम मिशन में व्रतधारी साधक की दीक्षा ली और पू. नंदकिशोरभाई 'गुणातीत प्रकाश' का व्रत लेकर गुरुहरि पप्पाजी और ज्योत को समर्पित होकर जीवन जीते हैं। 'गुणातीत ज्योत' में उनकी बहन पू. हंसा बहन गुणातीत भी अनेकों को प्रभु के मार्ग पर अग्रसर कर रही हैं।

पू. घनश्यामभाई स्वयं छोटी आयु में अनुपम मिशन में आजीवन भगवान भजने का व्रत लेकर साधक बने थे। गुरुहरि पप्पाजी और संतभगवंत साहेबजी की सेवा का उन्होंने अद्‌भुत लाभ लिया। 25 साल संतभगवंत साहेबजी की माहात्म्य युक्त सेवा के साथ-साथ भक्तों को भी महिमा की बातें करके सेवा में सराबोर किया। यूँ विद्यानगर में तो वे कॉलेज में पढ़ने आये थे, लेकिन संतभगवंत साहेबजी के प्रेम में डूब कर ब्रह्मविद्या के कॉलेज में नंबर लगा लिया और... जीवन सार्थक किया।

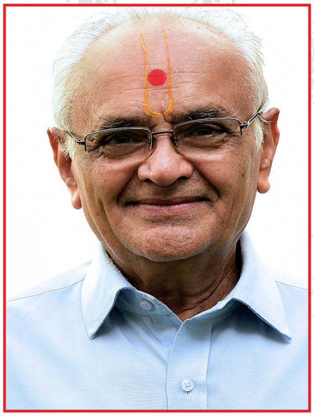

पू. घनश्यामभाई वींछी के संस्कार की अग्नि शांत नहीं हुई कि **21 अक्तुबर** को अनुपम मिशन के **74 वर्षीय पू. गोपालभाई सरैया** ने भी थोड़ी बीमारी झेल कर अक्षरधामगमन किया।

गुजरात के अंजार गाँव में जन्मे पू. गोपालभाई कॉलेज में पढ़ने के लिए मुंबई आये। यहाँ **पू. रमणीकभाई मोदी** के माध्यम से उन्हें गुरुवर्य योगीजी महाराज का प्रथम दर्शन हुआ। प.पू. बापा की आज्ञा से **ताड़देव** दर्शन करने गये और गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी का उन्हें समागम हुआ। धीरे-धीरे सत्संग की प्रवृत्तियों में वे जुड़ने लगे। बोरीवली में अनुपम मिशन में रहकर उन्होंने सुहृदभाव से सबकी सेवा की।

उनके जीवन का एक ही भाव था कि किसी भी प्रकार संतभगवंत साहेबजी को राज़ी करूँ और सभी को प्रभु में जोड़ दूँ।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने एक बार पूछा –

'बीमारों की सेवा करे, वह अच्छा

या

मंदिर का व्यवहार संभाले वह अच्छा

या

भगवान और भगवान के भक्तों का गुणगान किया करे वह श्रेष्ठ ?'

तब स्वामी ने स्वयं उत्तर देते हुए कहा था –

'जो भगवान, उनके साधु और उनके भक्तों का अखंड गुण गाया करे वह श्रेष्ठ !'

पू. गोपालभाई ने स्वामी की इस बात का अनुसरण बखूबी किया।

छोटे से छोटे बच्चे से लेकर, वृद्ध भक्त के साथ खूब आत्मीयता से वर्ते। मुंबई जैसी मायानगरी में रहते हुए भी वे किसी में भी बंधे नहीं, सभी को केवल सत्संग करने के लिए प्रेरित किया। अपने प्रेम से युवकों को भगवान भजने के मार्ग पर अग्रसर किया। संतों, हरिभक्तों से जब भी मिलते, तो ज्ञान देते हुए हँसी-खेल में आनंद कराते।

उनके पास गुणातीत स्वरूपों एवं भक्तों के प्रेरक प्रसंगों का मानो खज़ाना था। पिछले वर्ष ही अगस्त महीने के अंत में जब प.पू. गुरुजी लंदन के अनुपम मिशन गये, तब वे भी वहाँ मौज़ूद थे। एक दिन प.पू. गुरुजी सुबह पूजा कर रहे थे, तब **धुन होने के बाद गुरुवर्य योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी के कई प्रसंग सुना कर, प.पू. गुरुजी के साथ उन्होंने ज्ञानगोष्ठि की।**

उनकी सर्वदेशीयता और अभेददृष्टि अजोड़ थी। इसलिए यदि कोई हरिभक्त बीमार होता, तो समाचार मिलते ही वे तुरंत ही उससे मिलने वहाँ पहुँच जाते और धुन-भजन करके बल प्रदान करते। माहात्म्य का निरंतर प्रवाह बहाते हुए पू. गोपालभाई ने प्रत्यक्ष स्वरूपों की जिस प्रकार प्रसन्नता पाई, उसी प्रकार सर्वदेशीय दृष्टि रख कर उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करें...

शायद निष्ठा की कसौटी पर खरा उतारने के लिए श्रीजी महाराज लगातार ऐसे प्रसंग योजित करते रहे।

पू. गोपालभाई के अक्षरधामगमन के ठीक नौवें दिन,
अनुपम मिशन के वडील संतभाई **पू. गोविंदभाई चपला** भी
थोड़े दिन की बीमारी ग्रहण करके **30 अक्तुबर** को अक्षरनिवासी हुए।
वर्षों पहले वे विद्यानगर पढ़ने के लिए आये थे।
वहाँ गुरुहरि पप्पाजी और प.पू. सोनाबा का जोग होने पर,
उनकी आज्ञा से **संतभगवंत साहेबजी के सान्निध्य में**

कर्मयोगी साधु बन कर फॅक्टरी में जुड़ गये।

साधुता और माहात्म्य युक्त जीवन से अपने दिव्य दासत्व की सौरभ सत्संग में फैलाई। शांत, प्रामाणिक और स्वधर्मयुक्त सेवा-भक्ति से संतभगवंत साहेबजी और बड़े संतों की अपार प्रसन्नता प्राप्त की। उत्तर गुजरात मंडल में प्रादेशिक संत के रूप में अद्भुत सेवा करके, कई भक्तों को सत्संग यानि सत्पुरुष से जोड़ कर सर्वथा सुखी किया। **हमेशा मूक रहकर सभी की सेवा करना ही उनकी जीवनशैली थी।**

यूँ एक ही महीने में **अनुपम मिशन के पाँच भाइयों का अक्षरधामगमन होना बहुत ही अकल्पनीय प्रसंग हैं।**

लेखनी संवेदना व्यक्त कर सकती है - हम प्रार्थना कर सकते हैं... परंतु, दिल का एक कोना सोचता है कि

संतभगवंत साहेबजी तो इन सबके मात-पिता, बंधु-भाई-सखा...

फिर भी सभी को स्थैर्य प्रदान करते हुए वे कैसे तटस्थ हैं!

गुणातीत ज्ञान के मुताबिक चेतना की प्रगति हेतु ही सब कुछ होता है।

39 संतों को जब बोचासणवासी अक्षरपुरुषोत्तम संस्था से निकाला, तब प.पू. योगी बापा बोले थे–

मेरे तो चालीस बेटे चले गये...

इसी प्रकार, **संतभगवंत साहेबजी के तो पाँच साथीदारों, अरे! बेटों ने स्थूल रूप से विदाई ली है...**

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 5.12.'20,	शनिवार	–	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का दीक्षा दिन
(2)	दि. 11.12.'20,	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(3)	दि. 16.12.'20,	बुधवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(4)	दि. 22.12.'20,	मंगलवार	–	ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज की प्राकट्य तिथि
(5)	दि. 25.12.'20,	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(6)	**दि. 31.12.'20,**	**गुरुवार**	**–**	**प.पू. गुरुजी की निश्रा में रात्रि 10:00 बजे मध्यरात्रि महापूजा**
(7)	दि. 9.1.'21,	शनिवार	–	एकादशी, व्रत
(8)	**दि. 13.1.'21,**	**बुधवार**	**–**	**लोहड़ी, प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य दिन**
(9)	दि. 14.1.'21,	गुरुवार	–	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(10)	दि. 24.1.'21,	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(11)	दि. 26.1.'21,	मंगलवार	–	प्रजासत्ताक दिन
(12)	दि. 28.1.'21,	गुरुवार	–	पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का दीक्षा दिन

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine–Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052